प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

संक्षिप्त परिचय

आबू पर्वत स्थित नक्की झील का विहंगम दृश्य

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय, आबू पर्वत, राजस्थान, भारत
टेलीफोन-(02974)-238261, फैक्स-238952
वेबसाइट (भारत)-www.brahmakumaris.com

आध्यात्मिक संदेश

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक परमपिता शिव परमात्मा और पिताश्री ब्रह्मा, बेहद के घर मधुबन, ज्ञान सरोवर और शान्तिवन में

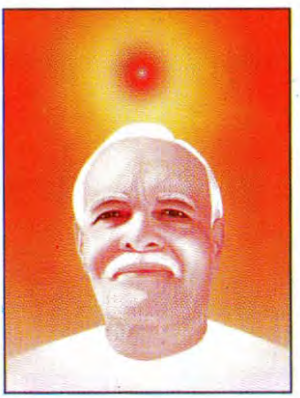

आने वाले सभी बच्चों का स्वागत करते हैं। अपने पिता के इस घर में आप केवल मेहमान ही नहीं हैं, आप उनके बच्चे भी हैं। आप महान् आत्मा हैं।

महान् आत्मा बनने के लिए आत्मिक शक्तियों को पहचानने की अति आवश्यकता है। जितना आत्मिक स्थिति का अभ्यास होगा उतनी ही बुद्धि की स्थिरता बढ़ेगी और बुद्धि शुद्ध होती जाएगी। सतोप्रधान बुद्धि, भौतिक और आणविक शक्तियों का प्रयोग केवल शान्तिपूर्ण उद्देश्य के लिए करेगी। इस प्रकार आत्मिक और आणविक शक्तियों के समन्वय द्वारा फिर से एक सुख-शान्तिमय दुनिया की स्थापना होगी।

शान्ति के दाता परमपिता शिव परमात्मा अपने बच्चों से कहते हैं – "मीठे बच्चों! आत्मा की शक्ति को पहचानो, आत्मा शान्त स्वरूप है। तुम्हारे पिता शान्ति के दाता हैं। तुम्हारा स्वधर्म शान्ति है। तुम्हारे कर्म भी शान्तिपूर्ण हैं। तुम अपने निजी वास्तविक स्वरूप को पहचानो तो एक ही क्षण में अपने भीतर शान्ति की अनुभूति करोगे।" "लाडले बच्चों! इस दुनिया की वर्तमान दशा को सुधारने के लिए स्वयं को परमात्मा का निमित्त-मात्र समझो।" स्वयं को निमित्त समझने से स्वत: और सदा ही परमात्मा की स्मृति रहेगी। परमात्मा करन-करावनहार हैं, उनसे सर्व आत्माओं को सदा ही श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा मिलती है।

निराकार परमपिता शिव परमात्मा,
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय
विश्व विद्यालय के संस्थापक

परमपिता शिव परमात्मा अति प्रिय, ज्योतिस्वरूप हैं। उनका कोई भी स्थूल आकार नहीं है और वे इस सांसारिक जन्म-मरण के चक्र से न्यारे हैं। वे सर्व आत्माओं के माता-पिता, बन्धु-सखा तथा सत्य ज्ञान देने वाले सद्गुरु हैं। वे हमारे आध्यात्मिक मार्ग-दर्शक और शिक्षक भी हैं। उनसे सदैव प्रेम, शान्ति, दिव्य प्रकाश, आध्यात्मिक शक्ति तथा सुख की किरणें प्रस्फुटित होती रहती हैं। उन्होंने ही पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम से इस संस्था की 1936 में स्थापना की है।

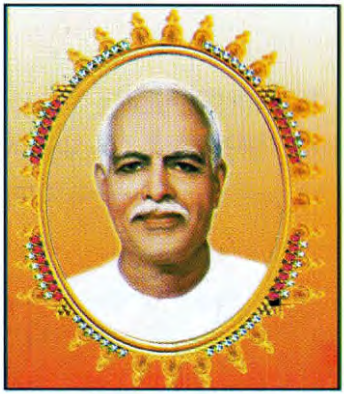

प्रजापिता ब्रह्मा,
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय
विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक

हमारे अति प्रिय "ब्रह्मा बाबा" शान्ति, पवित्रता, दिव्य ज्ञान और आध्यात्मिक शक्तियों के स्तम्भ थे।

वे बहुत ही विशाल हृदय, विस्तृत विचारधारा वाले और दूरांदेशी थे। वे उच्च कोटि के ज्ञानी थे। आध्यात्मिक ज्ञान एवं सहज राजयोग के ऊपर प्रभुत्व के कारण उन्होंने निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी स्थिति को प्राप्त किया। परमात्मा के प्रति अगाध प्रेम एवं दृढ़ निश्चय ने उन्हें विघ्न-विनाशक बना दिया जिससे वे मायाजीत एवं कर्मातीत बन गए।

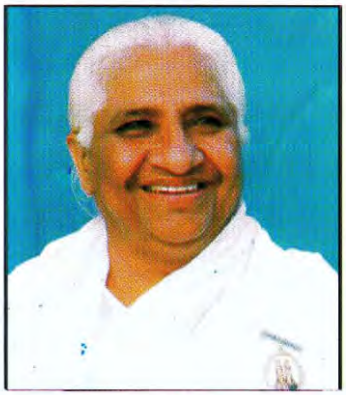

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि,
ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व
विद्यालय की पूर्व मुख्य प्रशासिका

पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी ने नि:संदेह यह प्रमाणित कर दिया कि आध्यात्मिक क्षेत्र में भी महिलाओं द्वारा संचालित संगठन, प्रकाशस्तम्भ बन लोगों के मन से अन्धेरे को हटा कर उन्हें विश्व में सुख और शान्ति प्राप्त करने का रास्ता दिखा सकता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह विद्यालय विश्व का एकमात्र, नारियों द्वारा संचालित संगठन है।

ज्ञान प्रकाश फैलाने वाली साक्षात् मणि बनकर दादीजी ने अपने नाम को चरितार्थ किया है।

राजयोगिनी दादी जानकी,
ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व
विद्यालय की मुख्य प्रशासिका

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी स्वतन्त्र भारत की, चुनी हुई कुछ आध्यात्मिक चिन्तक नारियों में एक हैं, जिन्होंने विश्व का व्यापक रूप से भ्रमण कर नारी शक्ति को जागृत करके शक्ति स्वरूपा बनाने का महान् कार्य किया है। अपने आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शन से दादीजी ने लोगों को परमात्मा के पितृत्व और मनुष्य के भ्रातृत्व-भाव का अनुभव कराया है। वैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा दादी जानकी जी को **"विश्व की सबसे स्थिर मन वाली महिला"** का खिताब मिल चुका है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

प्रारम्भ – कब और कैसे

सन् 1919 में स्थापित लीग ऑफ नेशन्स का प्रयोग जब असफल हो गया तो राजनैतिक क्षितिज पर एक बार फिर युद्ध के काले बादल मंडराने लगे, परिदृश्य अंधकार के काले साये में ढक गये, समाज विभिन्न बुराइयों से ग्रसित हो गया और चारों ओर नैतिक पतन चरम सीमा पर पहुँच गया। इन विपरीत परिस्थितियों में, द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व के वर्षों में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना (सन् 1936-1937 में) हुई।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की कहानी इस प्रकार है कि लगभग साठ वर्ष की अवस्था में दादा लेखराज नामक हीरों के एक सुप्रसिद्ध व्यापारी को अपने सत्य स्वरूप का साक्षात्कार करते, संसार के रहस्यों को समझने तथा परमात्मा के सत्य स्वरूप को पहचानने की गहरी दिव्य अनुभूति हुई। वे बाल्यकाल से अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति के थे और बाद का जीवन भी संस्कारित और चरित्र सम्पन्न था परन्तु, अपने जीवन के इस काल में उन्होंने परमात्मा से विरक्ति का अनुभव किया।

सन 1936-37 में, जब वे लगभग 60 वर्ष के आयु में थे, उन्हें परमात्मा से मिलने की तीव्र उत्कण्ठा हुई और उस सर्वोच्च सत्ता की ओर एक शक्तिशाली खिंचाव महसूस हुआ। अपने जीवन परिवर्तन की इस अवधि में उन्हें कई दिव्य साक्षात्कार हुए। सबसे पहले उन्हें ज्योति स्वरूप निराकार परमपिता परमात्मा शिव का साक्षात्कार हुआ। अपने दूसरे साक्षात्कार में उन्हें प्रेम, शान्ति, एकता, सुस्वास्थ्य, कानून और व्यवस्था से परिपूर्ण मूल्य-आधारित स्वर्णिम संसार का

साक्षात्कार हुआ। आने वाली शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में ये दृश्य प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली सच्चाई होंगे। अपने व्यवहारिक जीवन से दूसरों को प्रेरित करने, श्रेष्ठ मूल्य, राजयोग एवं सम्पूर्ण ज्ञान धारण कर दूसरे मनुष्यों को भी इसके निमित्त बनाने तथा सर्व गुणों का साक्षात् स्वरूप बनने की उन्हें परमात्म-प्रेरणा हुई जिससे कि नये स्वर्णिम युग का सूर्योदय शीघ्र हो सके। इसके साथ ही उन्हें इस कलियुगी पुरानी दुनिया के भयंकर विनाश, सम्पूर्ण नैतिक एवं चारित्रिक पतन तथा मनुष्य के क्रूरता की हद तक गिर जाने का भी साक्षात्कार हुआ।

अब उन्हें स्वयं को सांसारिक बन्धनों से मुक्त करने और परमात्मा का मानवीय माध्यम बनने का परमात्म-निर्देश प्राप्त हुआ ताकि परमात्मा उनके मानवीय तन का आधार लेकर मनुष्य को ज्ञान सुना सकें। इस परमात्म-ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने की भी उन्हें प्रेरणा मिली। उसी प्रेरणा के फलस्वरूप इस संस्था की स्थापना नैतिक, मानवीय और आध्यात्मिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए औपचारिक रूप से सन् 1937 में हुई। दादा लेखराज ने कोलकाता में स्वयं का विशाल पैमाने पर फैला हीरों का व्यापार अपने साझीदार को सौंप दिया और अपने जन्मस्थान हैदराबाद-सिंध (वर्तमान समय पाकिस्तान) में वापस लौट आए। यहाँ उन्होंने एक ट्रस्ट (न्यास) बनाया, जिसमें केवल माताएँ-बहनें ही थीं और उन्होंने अपनी सारी चल-अचल सम्पत्ति इस संस्था को चलाने के लिए इन माताओं-बहनों को सौंप दी। इस प्रकार उन्होंने नारी को उच्च सम्मान दिया और तब से नारी, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की क्रान्ति की अग्रदूत बन गई।

बाद में परमात्मा द्वारा दादा लेखराज को एक अलौकिक नाम दिया गया **"प्रजापिता ब्रह्मा"**। शिव परमात्मा के साकार माध्यम ब्रह्मा द्वारा उच्चारे हुए महावाक्यों के आधार पर जिनका अलौकिक और आध्यात्मिक पुनर्जन्म हुआ वे

ब्रह्माकुमारी और ब्रह्माकुमार कहलाए तथा इस शैक्षणिक संस्था को नाम मिला "प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय"।

सन् 1936 में इसकी शुरूआत एक पारिवारिक संगठन की तरह हुई, सन् 1937 में मूल्य शिक्षा, आध्यात्मिक ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा अनेकों तक पहुँचाने हेतु इसने एक संस्था का रूप धारण किया। इसके संचालन का कार्यभार मुख्यत: महिलाओं ने सम्भाला। इसकी सबसे पहली मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी जगदम्बा सरस्वती थीं, उन्हें जगत-माता के रूप में सम्मान मिला। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की वर्तमान मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी और सह-मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदय मोहिनी जी हैं।

मूलभूत आध्यात्मिक शिक्षाएँ

यह संस्था आज भारत और विश्व के लगभग 133* देशों में अपनी 8000* से भी अधिक शाखाओं के साथ एक विशाल वटवृक्ष की भाँति विकसित हो गई है। इन सेवाकेन्द्रों पर लगभग 9 लाख विद्यार्थी प्रतिदिन नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा ग्रहण करते हैं और राजयोग का अभ्यास करते हैं। यहाँ की कुछ प्रमुख शिक्षाएँ इस प्रकार हैं –

- परमात्मा एक हैं, वे निराकार एवं अनादि हैं। वे विश्व की सर्वशक्तिमान सत्ता हैं और ज्ञान के सागर हैं।
- परमात्मा विश्व की सर्व आत्माओं के निराकार माता-पिता हैं। परमात्मा के साथ सम्बन्ध की स्मृति और परमात्मा के प्रति प्रेम को "राजयोग" कहा

** सन् 2007 के आंकड़े

जाता है। राजयोग का अभ्यास व्यक्ति को आध्यात्मिक परिवर्तन की शक्ति प्रदान करता है। इसके अभ्यास से व्यक्ति के संस्कार शुद्ध बनते हैं, चारित्रिक उत्थान होता है एवं अनेक शारीरिक और आध्यात्मिक लाभ मिलते हैं। राजयोग से मानसिक तनावों से मुक्ति मिलती है तथा नकारात्मक संकल्पों को समाप्त करने की मानसिक शक्ति भी प्राप्त होती है।

- हमें स्वयं में नम्रता, सहनशीलता, धैर्य, सन्तुष्टता, मधुरता आदि दिव्य गुणों को धारण करने का पुरुषार्थ करना चाहिए।
- हमें स्वयं को पूर्णतया दिव्य बनाकर आगामी सतयुग के लिए तैयार करना है।
- इस सत्य ईश्वरीय ज्ञान को, स्वयं परमात्मा ने मनुष्य तन में अवतरित हो, उसको साकार माध्यम बनाकर दिया है। वे अपना यह दिव्य कर्त्तव्य कलियुग के अन्त में करते हैं जबकि विश्व में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का पतन हो चुका होता है और सतयुग की पुनर्स्थापना का समय होता है।

स्वर्णिम युग की एक झांकी

संयुक्त राष्ट्र संघ (यू. एन.) द्वारा मान्यता

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शिक्षाओं को वैश्विक स्वीकृति और अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई है। यह संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ (UN) का गैर सरकारी सदस्य (NGO) है तथा यूनीसेफ (UNICEF) एवं आर्थिक और सामाजिक परिषद् (ECOSOC) का परामर्शदाता सदस्य है। इसे संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा **अन्तर्राष्ट्रीय "शान्ति पदक"** से सम्मानित किया जा चुका है और साथ ही विभिन्न देशों द्वारा पाँच राष्ट्रीय स्तर के शान्ति-दूत पुरस्कार भी इसे प्राप्त हुए हैं।

न्यूयार्क में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी को संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव श्री वी. एस. सफरॉनचुक की तरफ से 'अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दूत पुरस्कार' प्रदान करते हुए यू.एन. के अन्डर सेक्रेटरी जनरल

श्रेष्ठ समाज के नव निर्माण हेतु कार्य

इस विश्व विद्यालय द्वारा श्रेष्ठ समाज के निर्माण हेतु कार्य करने के लिए अन्य तीन और संस्थाओं का निर्माण किया गया है – "राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान" एवं "वर्ल्ड रिन्युवल स्प्रीच्युअल ट्रस्ट" तथा "ब्रह्माकुमारी एज्युकेशनल सोसायटी"।

"राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान" में, समाज के विभिन्न वर्गों जैसे वैज्ञानिक एवं अभियन्ता, चिकित्सक, शिक्षक, संचार माध्यम से जुडे व्यक्तियों, व्यापारी एवं उद्योगपति, महिला, युवा, राजनीतिज्ञ, समाज-सेवक, न्यायविद्, प्रशासक, कलाकार, खिलाड़ी, यातायात से जुड़े लोग, सुरक्षा विभाग तथा ग्राम विकास इत्यादि की सेवा के लिए अलग-अलग प्रभाग बनाये गये हैं। समाज के सभी वर्ग राजयोग, नैतिक मूल्यों और ईश्वरीय ज्ञान की शिक्षाओं से लाभान्वित हो सकें, इसके लिए इन प्रभागों द्वारा कार्यशालाओं और सम्मेलनों एवं महासम्मेलनों आदि का आयोजन होता रहता है।

संस्था की गतिविधियाँ

विश्व में आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना द्वारा सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिये समाज के विभिन्न स्तरों पर यह संस्था प्रयासरत है। मानव मात्र की गरिमा और उसके श्रेष्ठ मूल्यों को जागृत करना, व्यक्ति की मौलिक अच्छाइयों एवं उसमें छिपी आध्यात्मिकता को पहचानना, यहाँ के पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य है। आन्तरिक गुणों के विकास एवं व्यक्ति की सुषुप्त शक्तियों के जागृत होने से जीवन में श्रेष्ठता का स्वाभाविक विकास होता है।

नैतिक मूल्यों के पतन तथा तीव्र और अनिश्चित परिवर्तनों की इस दुनिया में यह विश्व विद्यालय स्वयं की, परमात्मा की सत्य पहचान और विश्व की आध्यात्मिक समझ देकर व्यक्तिगत पारिवारिक और सामाजिक जीवन की पीड़ा को समाप्त करने में प्रयासरत है। यहाँ योग की व्यवहारिक विधियों की शिक्षा दी जाती है जिससे मन की शान्ति प्राप्त करने, आन्तरिक शक्तियों को विकसित करने और दूसरों के साथ रचनात्मक और सन्तोषप्रद व्यवहार में आने की कला आ जाती है।

इस ज्ञान की प्राप्ति, आत्मिक शक्तियों के द्वार की कुंजी प्राप्त करने के समान है और जब व्यक्ति स्वयं जान लेता है कि द्वार के उस पार क्या है तो उसी क्षण ही आत्मा के वास्तविक सौन्दर्य की ओर यात्रा प्रारम्भ हो जाती है। यह आध्यात्मिक यात्रा जीवन के महत्त्व और सम्भावनाओं के प्रति जागृति, आत्मा के वास्तविक अस्तित्व के प्रति गहरी अनुभूति, स्पष्ट निर्णय, श्रेष्ठ सम्मान और शक्तिशाली व्यक्तित्व का निर्माण करती है। इससे शीघ्र ही व्यक्ति को स्व पर शासन, श्रेष्ठ कर्म और आपसी मधुर सम्बन्धों की कला आ जाती है।

इन पाठ्यक्रमों, प्रवचनों और भाषणों का उद्देश्य बुद्धि की विवेक शक्ति और भावानात्मक पद्धति में सन्तुलन लाना है तथा व्यक्ति को किसी भी परिस्थिति में, उसकी आन्तरिक शक्तियों का प्रयोग करने हेतु योग्य बनाना है। विश्व विद्यालय के शिक्षक और विद्यार्थी व्यक्तिगत सभाओं, संस्थानों, जेलों, चिकित्सालयों, विद्यालयों, व्यवसायिक कार्यशालाओं आदि में, परिसंवादों और प्रवचनों के द्वारा व्यक्तिगत क्षमता का विकास, सकारात्मक मनन-चिन्तन तथा संगठित रूप में कार्य करने की कला आदि की शिक्षा देते हैं।

आबू पर्वत पर स्थित

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

शीतल पहाड़ियों की गोद में बसे आबू शहर से दस मिनट की पैदल दूरी पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय, जिसे प्यार से मधुबन (पाण्डव भवन) कहा जाता है, का दर्शन होता है। यहाँ मधुरता और वैराग्य का अनूठा संगम है। यह देश-विदेश के आध्यात्मिक जिज्ञासुओं को सहज आकर्षित करता है। यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक जीवन्त सामाजिक प्रयोगशाला और विश्व के नव-निर्माण के लिए आत्मनिर्भर मनीषियों का समुदाय है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पाँच मई 1950 को कराची से आबू पर्वत पर स्थानान्तरित हुआ। सबसे पहले यह संस्था ब्रज

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित मुख्यालय का एक दृश्य

कोठी में स्थापित हुई तथा इसके बाद पोकरण हाऊस में, जो कि बाद में पाण्डव भवन (मधुबन) के नाम से विख्यात हुआ। इसी मधुबन में स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा ने गहन योग साधना की तथा यज्ञ-वत्सों को दिव्य प्रेरणाएं प्रदान कीं जिससे वे ईश्वर के प्रति समर्पित होकर योगी व पवित्र जीवन जी सके। इसे ब्रह्मा बाबा के त्याग, तपस्या व सेवा की भूमि भी कहते हैं। स्वयं ज्ञानसागर परमात्मा सत्यम् शिवम् सुन्दरम् ने अपना साकार माध्यम ब्रह्मा को ही बनाया और ब्रह्मा बाबा ने इसी भूमि पर 18 जनवरी 1969 को अपना पुराना चोला (शरीर) छोड़ा अर्थात् सम्पूर्णता को प्राप्त हुए।

वैसे तो भारतवर्ष स्वयं ही एक तीर्थ स्थान है परन्तु उसमें भी विशेष तीर्थ है आबू पर्वत पर स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। यह पावन "मधुबन" स्वर्गाश्रम है। यह ऐसा तीर्थ स्थान है, जो समस्त विश्व की आत्माओं को शारीरिक एवं मानसिक सुख की प्राप्ति कराता है। सचमुच चेतन ज्ञान-गंगाएँ "मधुबन" में बैठी हैं। यहाँ शाँति प्रदान करने वाले सुन्दर वातावरण का आकर्षण है और यह प्रभु से मधुर मिलन मनाने का स्थान भी है। मधुबन की महिमा अपरमपार है, अवर्णनीय है, अनुभव करने योग्य है।

ज्ञान-योग व उच्च धारणाओं से जीवन को श्रेष्ठ बनाकर अपनी आध्यात्मिक प्यास बुझाने के लिए विश्व के हर भू-भाग से लोग यहाँ भाग-भाग कर आया करते हैं। शिव परमात्मा के अवतरण स्थल तथा प्रजापिता ब्रह्मा व जगदम्बा सरस्वती की साकार कर्मभूमि का ही प्यारा नाम है **"मधुबन"**। मधु अर्थात शहद, बन अर्थात् तपोवन आश्रम। यहाँ आते ही मधुरता, शीतलता, शान्ति और पवित्रता की अनुभूति स्वत: होने लगती है।

ओमशान्ति भवन

सन् 1983 में निर्मित ओमशान्ति भवन में मुख्यालय परिसर का मुख्य सभागृह "यूनिवर्सल पीस हॉल" स्थित है। बेहद आकर्षक तरीके से बने, इस सभागृह में 5,000 लोग बैठ सकते हैं तथा यहाँ एक ही समय में 16 भाषाओं में अनुवाद की सुविधा भी है। इसे सार्वजनिक दर्शनीय स्थल घोषित किया जा चुका है। प्रतिदिन देश-विदेश से 8,000 से भी अधिक पर्यटक इसे देखने आते हैं। यहाँ प्रतिवर्ष विशाल आध्यात्मिक महासम्मेलनों का आयोजन होता रहता है। साथ-साथ भारत तथा विदेश से आये हुए सभी भाई-बहनों के लिए राजयोग के कार्यक्रम, जीवन-मूल्य शिक्षा से सम्बन्धित संगोष्ठियाँ एवं प्रशिक्षण आदि के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

मधुबन प्रतिवर्ष लगभग एक लाख मेहमानों का आतिथ्य करता है। यहाँ स्थायी रूप से निवास करने वाले भाई-बहनें ही यहाँ स्थित 45 विभागों के

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित मुख्यालय के 'ओमशान्ति भवन' का एक दृश्य

संचालन का उत्तरदायित्व संभालते हैं तथा विश्व-भर से निरन्तर आने वाले मेहमानों और विद्यार्थियों की भौतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तत्पर रहते हैं। इसमें आवास-निवास भवन (एरोप्लेन भवन, ट्रेनिंग सेण्टर, इन्द्रप्रस्थ, माईट हाऊस, लाईट हाऊस, विशाल भवन, स्वदर्शन भवन, ज्ञान-विज्ञान भवन, राजयोग भवन, कुंज भवन, सुखधाम) तथा मेडिटेशन हॉल भी देखने योग्य हैं। यहाँ साहित्य, दूर-संचार, चिकित्सा, यातायात, दृश्य-श्रव्य (Audio-Video), बागवानी इत्यादि अनेक विभाग हैं। यहाँ के रसोईघर में एक साथ 3,000 व्यक्तियों के लिए भोजन बनाया जा सकता है। यहाँ परमात्मा की याद में बेहद स्वादिष्ट टोली (प्रसाद) बनायी जाती है। मधुबन की चाय सभी पसन्द करते हैं।

अनोखी गतिविधियाँ

यही एक ऐसा विश्व विद्यालय है जहाँ एक ही क्लास में माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी आदि सभी सम्बन्धी एक साथ एक ही पढ़ाई पढ़ते हैं। किसी भी लिंग, धर्म, देश, वर्ण व रंग का व्यक्ति हो, सभी को समान विद्यार्थी माना जाता है। सेवाकेन्द्रों पर विद्यार्थियों का विधिवत् रूप से पंजीकरण होता है। इस अन्तरराष्ट्रीय मुख्यालय का विश्व के 8000 सेवाकेन्द्र अनुसरण करते हुए चलते हैं।

इस महान धरा पर लाखों आत्माएँ अपने प्यारे प्रियतम प्रभु से मिलकर अनेक दिव्य अनुभव कर रही हैं तथा परम पावन प्रभु की दृष्टि पाकर निहाल होती हैं। ईश्वर से अमृत वचन सुनकर मनुष्य से देवत्व की ओर चल चुकी हैं।

पाण्डव भवन

मधुबन में पाण्डव भवन का आंगन बरबस लोगों के मन में शांति भर देता है। इस आँगन में बैठते ही निरन्तर परमात्मा की याद आती रहती है। कहा जाता है कि पाण्डवों ने साधनों को त्याग कर भगवान को ही अपने साथी-सारथी के रूप में स्वीकार किया। ठीक वैसे ही परमपिता शिव को अपना सर्वस्व समझ, उस पर न्योछावर होने वाली आत्मायें ही यहाँ निवास करती हैं। ये दिल से गाती रहती है "प्रभु तुम मेरे प्राण हो, श्वास-संकल्प ही नहीं, जीवन-धन हो। आप जहाँ बिठाओ, जैसे चलाओ, जो खिलाओ, आप की मर्जी ही हमारा संसार है"। यह ज्ञान-योग सिखाने वाला सच्चा ज्ञान-विज्ञान भवन ही नहीं चैतन्य दिलवाड़ा भी कहलाता है। यहाँ समर्पित भाई-बहनें योग साधना में मग्न रहते हैं।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित मुख्यालय के 'पाण्डव भवन' का एक दृश्य

मधुबन के मुख्य चार धाम

1. बाबा का कमरा या मेडिटेशन रूम

यह परमात्मा के साकार माध्यम पिता श्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का निवास स्थान था। उसी कमरे को अब योगानुभूति-कक्ष के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस छोटे-से स्थान पर सृष्टि के सृजनहार ने विश्व नव-निर्माण की सारी संकल्पनायें की थी। तभी तो कहा जाता है कि ब्रह्मा ने संकल्प से सृष्टि रची। यहाँ एकाग्रता से बैठते ही लोगों को ईश्वरीय शक्ति व शान्ति का अनुभव होने लगता है। ईश्वरीय वाणी में इसे **"स्नेह का धाम"** कहा गया है।

इस कमरे में बैठने वाले को गुणों का सागर बाबा, गुणों से भरपूर कर देता है। इस कमरे की उपयोगिता बताते-हुए परमात्मा पिता ने कहा है, 'बाप समान बनने का दृढ़ संकल्प उत्पन्न हो तो इस कमरे में आ जाना।'

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित मुख्यालय में 'बाबा के कमरे' का एक दृश्य

2. बाबा की झोपड़ी

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने इसे 1959 में निर्मित करवाया। यहाँ ही तपस्या कर ब्रह्मा बाबा ने रूहानियत में सम्पूर्णता प्राप्त की। त्याग-तपस्या, स्वच्छता और सादगी वाले इस जादुई स्थान पर बैठते ही जिज्ञासुओं के अंत:करण पावन होने लगते हैं।

नव-सृष्टि के सृजन को व्यवहारिक रूप देने हेतु ब्रह्मा बाबा यहाँ संगोष्ठियाँ करते, यज्ञ-वत्सों को पत्र लिखते व ज्ञान-चर्चा करते थे। बाबा-मम्मा द्वारा लगाया हुआ बगीचा भी यहाँ पर है, जिसमें अंगूर की बेल विशेष है, यह सबके मन को आकर्षित करता है। ईश्वरीय महावाक्यों में इसे **"स्नेह-मिलन का धाम "** कहा गया है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित मुख्यालय में 'बाबा की झोपड़ी' का एक दृश्य

3. शान्ति स्तम्भ

अठारह जनवरी 1969 को जब ब्रह्माबाबा अव्यक्त हुए तब उनके समाधि स्थल पर, सरकारी अधिकारी की सम्मति से, शान्ति स्तम्भ का निर्माण किया गया।

यह पिताश्री ब्रह्मा के त्याग व तपस्या की स्मृति में निर्मित यादगार है। इससे निकलने वाले शान्ति, ज्ञान, शक्ति और पवित्रता का प्रकम्पन मानव-मात्र को पवित्र व योगी जीवन जीने की प्रेरणा देता हैं। इसके समक्ष खड़े होने से ऐसी भासना आती है कि आज भी पगड़ी बाँधे हुए ब्रह्मा बाबा सूक्ष्म वतन से विशाल बाँहें फैलाये बच्चों का आह्वान कर रहे हैं। यहाँ आने वाले सभी लोग इसे चैतन्य मन्दिर की तरह मानते हैं। ब्रह्मा-वत्स इसे **"महा-धाम"** मानते हैं।

परमात्मा पिता ने इसकी विशेषता को यह कहकर वर्णन किया है कि यदि शक्तिशाली बनना हो तो शान्ति-स्तम्भ पहुँच जाना।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित मुख्यालय में 'शान्ति-स्तम्भ' का एक दृश्य

4. हिस्ट्री हॉल

यह सन् 1960 में ब्रह्मा द्वारा बनवाया गया। ज्ञान-यज्ञ के आदि-रत्नों के चित्र हिस्ट्री हाल में प्रदर्शित किए गए हैं। यह बाबा-मम्मा द्वारा बनवाया हुआ ज्ञान-योग का पहला हाल है जो आज भी ब्रह्मा वत्सों का तपस्या कुण्ड है।

आज भी नव-निर्माण की संगोष्ठियाँ यहाँ होती रहती हैं। इसी कक्ष में साकार ब्रह्ममुख कमल से निराकार शिव पिता के जो महावाक्य (मुरली) उच्चरित हुए हैं, उनको सभी स्थानीय सेवाकेन्द्रों पर नियमित रूप से सुनाया जाता है तथा सभी की आध्यात्मिक शक्तियों से पालना कर, श्रेष्ठ धारणा-युक्त जीवन बनाकर सद्गुणों से सशक्त बनाया जाता है। ईश्वरीय महावाक्यों में इसे **"व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति का साधन"** कहा गया है। परमात्मा पिता ने इसका महत्त्व बताते हुए कहा है, 'कभी व्यर्थ संकल्प बहुत तेज हों तो हिस्ट्री हॉल में पहुँच जाना।'

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित मुख्यालय में 'हिस्ट्री हॉल' का एक दृश्य

ज्ञान सरोवर

बेहतर विश्व के लिये अकादमी

"बेहतर विश्व के लिये अकादमी" उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए एक अति आधुनिक संस्थान है। इस अकादमी को प्यार से "ज्ञान-सरोवर" भी कहा जाता है। यद्यपि मधुबन और ब्रह्माकुमारी के विश्वव्यापी सेवाकेन्द्रों में संस्था की मौलिक शिक्षाओं पर जोर दिया जाता है परन्तु इस अकादमी द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों को प्रदान की जाने वाली शिक्षाओं में "मूल्यनिष्ठ शिक्षा" पर जोर दिया जाता है जो विभिन्न वर्गों द्वारा व्यवहारिक रूप से प्रयोग करने के योग्य और अत्यन्त उपयोगी है। इस अकादमी में निम्नलिखित सत्रह विभाग बने हुए हैं :

- 1. शिक्षा विभाग
- 2. समाज सेवा विभाग
- 3. व्यवसाय एवं उद्योग विभाग
- 4. कला एवं संस्कृति विभाग
- 5. खेल प्रभाग
- 6. ग्राम विकास प्रभाग

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित 'ज्ञान सरोवर' का हेलीकाप्टर से लिया गया दृश्य

- 7. जन-संचार माध्यम
- 8. कानून प्रभाग
- 9. चिकित्सा क्षेत्र
- 10. यातायात प्रभाग
- 11. सुरक्षा प्रभाग
- 12 धार्मिक प्रभाग
- 13. वैज्ञानिक एवं अभियन्ता प्रभाग
- 14. महिला प्रभाग
- 15. राजनीतिज्ञ प्रभाग
- 16. युवा विकास प्रभाग
- 17. प्रशासक सेवा प्रभाग

अकादमी का पाठ्यक्रम जीवन मूल्य, वैश्विक दृष्टिकोण, समकालीन नैतिक और सांस्कृतिक अभिसंरचना के प्रगतिशील तत्वों पर आधारित है। यह निश्चय ही समाज को गिरावट से रोकने में समर्थ सिद्ध हो रहा है। इस मूल्य-आधारित शिक्षा से एक सत्य एवं श्रेष्ठ समाज का निर्माण होगा जहाँ मनुष्य में भौतिक, आध्यात्मिक एवं भावात्मक पक्षों का सुन्दर समन्वय होगा।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित
'ज्ञान सरोवर' के 'मुख्य द्वार' का एक दृश्य

कुछ पाठ्यक्रम 3 से 30 दिन तक की अवधि के लिए तैयार किए गए हैं, जिनके विषय हैं आत्म-उत्थान, सकारात्मक चिन्तन, आध्यात्मिकता का अनुप्रयोग, नेतृत्व प्रशिक्षण, तनावमुक्ति, स्व-प्रबन्धन आदि।

यह अकादमी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, मुख्यालय (मधुबन) से 4 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। अट्ठाइस एकड़ की भूमि में बसे हुए एक सम्पूर्ण गाँव के रूप में "बेहतर विश्व के लिये अकादमी" एक सामुदायिक विकास योजना है। प्राकृतिक संरचना और मूल पर्यावरण को बिना परिवर्तित किए, अकादमी परिसर की रूपरेखा ग्रामीण और शहरी दोनों तत्वों को एक श्रेष्ठ और सम्पूर्ण वातावरण में एकबद्ध करती है। यह पर्यावरण की दृष्टि से श्रेष्ठ और वायु एवं ध्वनि प्रदूषण से पूर्णतया मुक्त है।

यहाँ तीन कृत्रिम झीलें बनाई गई हैं जो परिसर के सौन्दर्य में चार चाँद लगा देती हैं। स्नानगृहों का पानी रूपान्तरित कर 20,000 फलदायक वृक्षों

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित 'ज्ञान सरोवर' का एक दृश्य

एवं अन्य पौधों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह स्थान एक नयनाभिराम, आनन्ददायक वातावरण प्रदान करता है। मौसम के प्रभाव से बचाने के लिए वृक्षों एवं पौधों की बहुत देखभाल की जाती है और निरन्तर जल वितरण होता रहे उसके लिए "ड्रिप" (छिड़काव) सिंचाई यन्त्र भी लगाया गया है। अकादमी परिसर में टेलीफोन ऑफिस, डिस्पेन्सरी, सौर ऊर्जा द्वारा संचालित आपातकालीन प्रकाश व्यवस्था और कम्प्यूटर आदि सभी आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

"ज्ञान सरोवर" का वायदा है कि शिक्षण के क्षेत्र में वह एक प्रेरणा स्रोत का कार्य करेगा। ज्ञान सरोवर स्थित "बेहतर विश्व अकादमी" का उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व के लिए ज्ञान का प्रकाश-स्तम्भ बनकर मार्ग प्रदर्शन करना है। यह अकादमी आध्यात्मिक बौद्धिकता और आधुनिक मान्यताओं के समन्वय द्वारा एक बेहतर विश्व के निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर रही है।

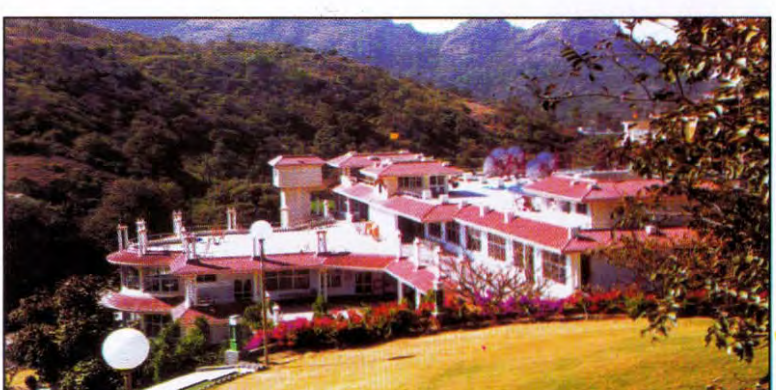

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित ज्ञान सरोवर के 'भोजनालय भवन' का एक दृश्य

ज्ञान सरोवर के मुख्य आकर्षण

▸ **यूनिवर्सल हारमनी हॉल** – इस सभागृह में 1,800 व्यक्तियों के बैठने तथा एक साथ 16 भाषाओं में अनुवाद की व्यवस्था है। यहाँ "हीटिंग" एवं "कूलिंग" दोनों सुविधाएँ हैं। **प्रशिक्षण केन्द्र (ट्रेनिंग सेन्टर)** – इस शैक्षणिक भवन में 13 परिसंवाद कक्ष हैं। ▸ **राजयोग सभागृह** – अकादमी परिसर में दो राजयोग सभागृह है जिनमें क्रमश: 300 एवं 500 व्यक्ति बैठ सकते हैं। ▸ **आध्यात्मिक कलादीर्घा (आर्ट गैलरी)**– यह कला प्रदर्शनी व्यक्ति के सकारात्मक दृष्टिकोण की और सार्वभौमिक मानवीय, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की वृद्धि करती है। ▸ **आवासीय भवन –1. राजऋषि भवन 2. हारमनी हॉउस एवं विष्णुपुरी** ▸ भोजन-कक्ष एवं रसोईगृह- यहाँ एक बड़ा रसोईघर और 7 भोजन-कक्ष हैं। एक ही समय पर 2000 व्यक्तियों के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन बनाने और खिलाने के साधनों से यह सुसज्जित है। भोजन योगयुक्त वातावरण में, स्वास्थ्य-पथ्य-सिद्धान्तों के अनुसार तैयार किया जाता है। परिसर के अन्य स्थानों की तरह यहाँ भी नशीले पदार्थों एवं सिगरेट आदि का सेवन सख्त निषेध है। ▸ **प्रशासनिक कार्यालय एवं अन्य सुविधाएँ** - ये हारमनी हॉल एवं ट्रेनिंग सेन्टर में स्थित हैं। इनमें बेहतर संचार सुविधाएँ उपलब्ध हैं। अकादमी की गतिविधियों को सहज और सरल ढंग से संचालित करने हेतु ऑडियो तथा विडियो विभाग भी हैं। ▸ **अस्पताल** - एक छोटा अस्पताल आवासीय चिकित्सकों के साथ चिकित्सीय सुविधाएं प्रदान करता है। ▸ **पुस्तकालय एवं अनुसंधान प्रयोगशाला** - उच्च अध्ययन केन्द्र में पुस्तकालय की सुविधा भी उपलब्ध है तथा स्पार्क (Sparc)नाम से एक आध्यात्मिक अनुसंधान प्रयोगशाला भी है।

शान्तिवन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का सबसे विशाल परिसर शान्तिवन है, जो वर्तमान समय बेहद ईश्वरीय सेवा करते हुए जन-जन को परमात्म संदेश देने का कार्य कर रहा है। यह शान्तिवन परिसर 70 एकड़ भूमि पर फैला हुआ है। इस परिसर का निर्माण सन् 1996 में शुरू हुआ और यह केवल एक वर्ष में ही बनकर तैयार हो गया। यह बेहद शोभनीक परिसर आबू रोड से आबू पर्वत जाते समय, रेलवे स्टेशन से मात्र 6 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। विश्व परिवर्तन हेतु निरन्तर प्रगतिशील इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की बेहद गतिविधियों के लिए इस परिसर का नव-निर्माण किया गया है। इस परिसर में आध्यात्मिक शिक्षा दी जाती है तथा नियमित विद्यार्थियों को परमात्मा के साथ गहन आध्यात्मिक सम्बन्ध की अनुभूति करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ मानव के अन्त:करण को दिव्य बनाया जाता है और उसे स्वयं के आन्तरिक और बाह्य नकारात्मक प्रभावों से मुक्त होने की शिक्षा दी जाती है ताकि व्यक्ति श्रेष्ठ

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू रोड़, तलहटी स्थित 'शान्तिवन' के आवासीय परिसर 'डायमण्ड हॉउस' का बाहरी दृश्य

आध्यात्मिक स्थिति बनाकर देवी-देवताओं के समान सर्वगुण-सम्पन्न स्थिति को प्राप्त करने के योग्य बन सके।

यहाँ पर भोलेनाथ का विशाल भण्डारा है जिसमें 20 हजार व्यक्तियों का भोजन (जिसे ब्रह्माभोजन कहते हैं) एक समय पर बनाया जा सकता है। यहीं पर विश्व का सबसे बड़ा **सौर-ऊर्जा संयंत्र** है जिसके द्वारा भोजन निर्मित किया जाता है। यहाँ तीन मंजिला भवन में एक साथ 5 हजार व्यक्तियों के भोजन करने की व्यवस्था है। मिनरल वाटर की बड़ी-बड़ी मशीनें लगी हुईं हैं और सभी को मिनरल पानी पीने को सहज प्राप्त होता है। इस परिसर में **"एवर हेल्दी"** नामक अस्पताल भी है जो स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवाएँ प्रदान करता है।

वर्तमान समय सभी दादियाँ, जो संस्था का प्रशासन संभालती हैं, यहीं निवास करती हैं तथा अब यज्ञ की सभी गतिविधियाँ इसी तपोवन से चला करती हैं। यहाँ विशाल डायमण्ड हॉल में नवम्बर से लेकर अप्रैल तक सभी नियमित विद्यार्थियों अर्थात् ब्रह्मावत्स भाई-बहनों हेतु परमपिता परमात्मा से मिलन के कार्यक्रम चलते रहते हैं। मई से सितम्बर तक पूरे भारतवर्ष के नये जिज्ञासुओं के लिये राजयोग

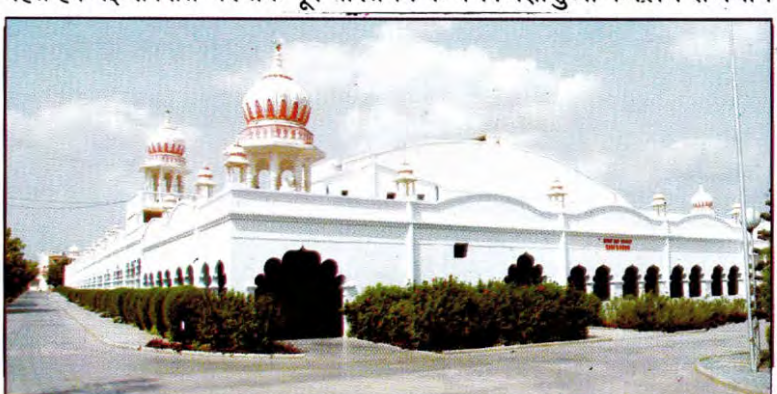

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू रोड़, तलहटी स्थित 'शान्तिवन' के विशाल सभागार 'डायमण्ड जुबली हॉल' का बाहरी दृश्य

शिविरों के कार्यक्रम चलते रहते हैं। इसके साथ-साथ विभिन्न वर्गों हेतु मीटिंग, कान्फ्रेंस, महासम्मेलन भी आयोजित किये जाते हैं। इस तरह पूरे वर्ष यहाँ कार्यक्रम चलते ही रहते हैं।

शान्तिवन का मुख्य आकर्षण है यहाँ का विशाल, **भव्य डायमण्ड जुबली हॉल** जो कि संस्था के हीरक जयंती समारोह के उपलक्ष्य में बनाया गया था। यह डायमण्ड हॉल एशिया का सबसे बड़ा, बिना स्तम्भ का(Pillar-less) सभागार है। हॉल के ऊपर चारों ओर मंदिर के आकार की डिजाइन बनाई गई है जो सभी के मन को आकर्षित करती है। इस हॉल के अन्दर 4 विशाल टी. वी. स्क्रीन लगी हुई हैं ताकि पीछे बैठे दर्शक भी सहज ही प्रोगाम देख सकें । यह वास्तुकला की दृष्टि से उत्तम तथा आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है। इस सभागार में लगभग 20 हजार व्यक्तियों के एक साथ बैठने की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त एक अन्य सभागृह भी है जिसे कान्फ्रेंस हॉल कहते हैं। इसमें हीटिंग एवं कूलिंग दोनों सुविधाएँ हैं। इस सभागृह में प्रतिवर्ष राजयोग शिविर, कान्फ्रेन्स, मीटिंग आदि कार्यक्रम चलते रहते हैं। इसमें 2000 व्यक्ति एक साथ बैठ सकते हैं। शान्तिवन में अन्य छह छोटे सभागार भी हैं। प्रत्येक हॉल में व्याख्यान एवं कार्यशाला इत्यादि के लिए 350 लोग बैठ सकते हैं। यहाँ पर योग की गहन अनुभूति के लिए दो योग-कक्ष भी बने हुए हैं।

शान्तिवन परिसर में ओम आर्ट गैलरी नामक एक **आध्यात्मिक संग्रहालय** भी है जो गोलाकार बना हुआ है, जिसके ऊपर ॐ (ओउम्) बना हुआ है, जो मानव को कुछ ही क्षणों में आन्तरिक शान्ति की अनुभूति कराता है। यहाँ बने हुए मॉडल्स आदि के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान के अनेकों गुह्य रहस्य सरलतम तरीके से स्पष्ट हो जाते हैं। यह दर्शनीय स्थल है।

शान्तिवन परिसर में सबसे पहले बना हुआ **तपस्या धाम** है, जो आकार में कमल पुष्प के समान बना हुआ है। यह गोल आकार का है और ऊपर कमल के

पुष्प की पंखुड़ी जैसे प्रतीत होता है। इसके चारों ओर पानी के फव्वारे तन-मन को प्रफुल्लित कर देते हैं। इसके चारों ओर उद्यान बना हुआ है जहाँ एकांत में बैठकर मनन-चिंतन और राजयोग का अभ्यास कर सकते हैं।

इस परिसर में विद्यमान **आवासीय भवनों में लगभग 10,000 लोगों के रहने की व्यवस्था है** और इनमें सभी आवश्यक सुविधायें उपलब्ध हैं। शान्तिवन के **ज्ञानामृत भवन** में मुद्रणालय भी है जो इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की मुद्रण की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तत्पर रहता है। यहाँ से दो मासिक पत्रिकाएँ – 'ज्ञानामृत' (हिन्दी) एवं 'दि वर्ल्ड रिन्युवल' (इंगलिश) प्रकाशित होती हैं। इसके अतिरिक्त सेवाओं के लिए छोटी-छोटी पत्रिकाएं, फोल्डर, नोटबुक , डायरी इत्यादि प्रकाशित होते रहते है तथा हिन्दी, अंग्रेजी व अन्य भारतीय भाषाओं का ईश्वरीय साहित्य भी यहाँ मुद्रित किया जाता है।

यहाँ पर सभी आधुनिक सुविधाएँ हैं जैसे संचार सुविधाएँ, यातायात सुविधाएँ, सुव्यवस्थित सड़कें, सौर-ऊर्जा संयन्त्र आदि।

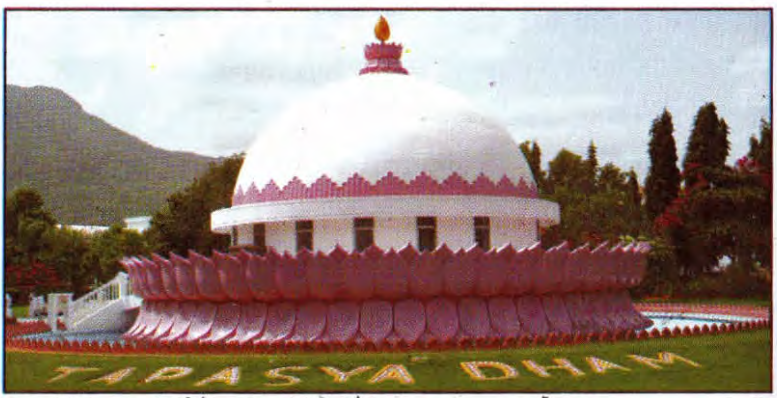

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू रोड़, तलहटी स्थित 'शान्तिवन' के तपस्या स्थल 'तपस्या धाम' का बाहरी दृश्य

पीस पार्क – दर्शकों के लिए मरूद्यान

पीस पार्क स्वप्निल संसार का साकार उपवन है जहाँ प्राकृतिक वातावरण और मनोरंजन का अद्भुत समन्वय है। यह अरावली पर्वत मालाओं की दो चोटियों – सुप्रसिद्ध तीर्थस्थल गुरुशिखर और अचलगढ़ के मध्य में बसा है। यह उद्यान प्राकृतिक सौन्दर्य का एक अनूठा नमूना है जो कि आबू पर्वत स्थित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय से 8 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ प्रतिदिन आने वाले हजारों दर्शकों का स्वागत खुले दिल से किया जाता है।

पीसपार्क में, दर्शकों को प्राकृतिक वातावरण में परिभ्रमण कराने के साथ-साथ आत्मा के आन्तरिक सौन्दर्य से भी परिचित कराया जाता है। यहाँ राजयोग की शिक्षाओं के रुचिकर पहलुओं पर ध्यान आकर्षित किया जाता है। वीडियो देखने के बाद दर्शक राजयोग के व्यवहारिक प्रभावों का अनुभव अपने मनपसन्द स्थान पर कर सकते हैं जैसे, घास से बनी झोपड़ी में, पत्थर की गुफा में, बांसों से निर्मित कुटी में और यदि वे चाहें तो उद्यान के बगीचों के प्राकृतिक शान्तिमय वातावरण में किसी भी एकान्त स्थल पर इसका अभ्यास कर सकते हैं।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित 'पीस पार्क' का मुख्य द्वार

इस पार्क में बांस से बनी बाबा की झोपड़ी बहुत ही मनमोहक है जहाँ बैठकर जिज्ञासु निरन्तर योग का गहन अनुभव कर सकते हैं। यहाँ फाइबर के बने कक्ष में लेजर किरणों द्वारा परमात्म-अनुभूति कराई जाती है। खेलने के मैदान, पिकनिक स्थल, विभिन्न प्रकार के झूलों और प्रकृति-भ्रमण के साथ यह उद्यान हमारा सम्पूर्ण मनोरंजन करता है। जैसे ही आप उद्यान में प्रवेश करेंगे वहाँ आपको एक अनोखा "रॉक गार्डन" मिलेगा जो सरस नयनाभिराम परिधान धारण कर आपके स्वागत के लिए सदैव तैयार रहता है। इस उद्यान के एक भाग में फलों का एक बगीचा है तथा यहाँ नींबू के भी कई वृक्ष हैं। इसके अतिरिक्त चारों तरफ भिन्न-भिन्न प्रकार के फूलों के पौधे और लताएँ आदि हैं जो इस उद्यान के सौन्दर्य में चार चाँद लगा देते हैं। रंग-बिरंगे गुलाबों का बगीचा यहाँ का विशेष आकर्षण है।

लगभग 12 एकड़ क्षेत्र को घेरती हुई इसकी चारदीवारी कलात्मक ढ़ंग से बनी है। गुलाब, कनेर और रात की रानी की मधुर सुगन्धों से सुवासित वायु, बोगनबेलिया की मनोहारी लतायें तथा बलूत के छायादार वृक्ष प्राकृतिक सौन्दर्य के सुधि पर्यटकों को तपती दोपहरी से राहत प्रदान कर इस पृथ्वी पर स्वर्गिक वातावरण की अनुभूति कराते हैं।

'पीस पार्क' के विशाल गार्डन का दृश्य

आध्यात्मिक संग्रहालय

नक्की झील के बगल में और आबू पर्वत की हृदयस्थली में यह "विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय" स्थित है। यहाँ आकर्षक बृहदाकार चित्रों, प्रतिमाओं तथा ट्रांसलाईट्स (पारदर्शी प्रकाशित चित्र) के माध्यम से यह प्रदर्शित किया गया है कि किस प्रकार बुराइयों और दु:खों का यह युग शीघ्र ही जाने वाला है और पवित्रता, सुख, शान्ति से सम्पन्न सतयुग शीघ्र ही आने वाला है। यहाँ तीनों कालों का और पांचों युगों का ज्ञान प्राप्त होता है। घोर कलियुगी दुनिया के दृश्यों को देख कर्मों की गहन गति समझ में आती है।

इस संग्रहालय में 14 मिनट का एक लेजर-शो दिखाया जाता है जो कि विज्ञान और आध्यात्मिकता का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत करता है। इस शो के अन्त में दर्शकों को लेजर-किरणों के द्वारा कुछ क्षणों के लिए राजयोग की विशेष अनुभूति कराई जाती है। संग्रहालय में एक राजयोग-कक्ष भी बना हुआ है जहाँ आगन्तुक जिज्ञासुओं को राजयोग का प्रशिक्षण दिया जाता है। आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लाभ हेतु यहाँ प्रात: और सांयकाल, दोनों समय राजयोग शिविर का भी आयोजन होता है।

'आध्यात्मिक संग्रहालय' का भवन

जे. डब्ल्यु. एम. ग्लोबल अस्पताल एवं शोध संस्थान

आबू पर्वत स्थित "जे. डब्ल्यु. एम. ग्लोबल अस्पताल एवं शोध संस्थान" की स्थापना 1990 में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के निर्देशन में हुई थी। ग्रामीण क्षेत्र में आधुनिक उच्च स्तर की सम्पूर्ण स्वास्थ्य सुरक्षा सेवा प्रदान करने हेतु इसकी रूपरेखा तैयार की गई है। अस्पताल का प्रबन्धन एवं संचालन एक धर्मार्थ प्रन्यास द्वारा किया जाता है जिसकी स्थापना और देखरेख ब्रह्माकुमारी संगठन के सदस्यों द्वारा की जाती है। वे यहाँ कर्मचारी और साथ ही भोजन एवं दवाइयों की सुविधा भी उपलब्ध कराते हैं।

सन् 1990 में निर्मित बहिरंग रोगी विभाग में हृदय रोग, नाक-कान-गला, सामान्य रोग, हड्डी-रोग, मानसिक रोग, नेत्र रोग, महिला रोग एवं शल्य चिकित्सा आदि 16 विभाग हैं। रोग-परीक्षण इकाइयों में रोग की जाँच के लिए कई प्रयोगशालाएं तथा एक्स-रे आदि की सुविधा है। इसके अतिरिक्त

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आबू पर्वत स्थित
'ग्लोबल हॉस्पिटल' का बाहरी दृश्य

प्राकृतिक चिकित्सा, चुम्बक चिकित्सा, होम्योपैथी, आयुर्वेदिक इत्यादि चिकित्साओं की भी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इन चिकित्सीय सेवाओं का संचालन और प्रशासन 80 से भी अधिक योग्य चिकित्सकों एवं नर्सों के द्वारा सम्पन्न होता है। इनमें से अधिकांश चिकित्सक और नर्स, अस्पताल के द्वारा निर्मित आवासों में ही निवास करते हैं ताकि आवश्यकता होने पर वे शीघ्र आ सकें।

अंतरंग रोगी विभाग में 70 शैया हैं। इसमें ऑपरेशन-कक्ष सहित चार वृहद् वार्ड भी हैं। चार आवासीय चिकित्सक 24 घण्टे आपातकालीन सेवा में, सहायक दल और नर्स आदि के साथ उपस्थित रहते हैं। इस अस्पताल में जनरल वार्ड तथा स्पेशल वार्ड भी हैं। आई. सी. यू. (I.C.U.) और इमरजेन्सी वार्ड की भी व्यवस्था है। पूरी तरह आत्मनिर्भर इस चिकित्सालय का अपना जल शोधन संस्थान, जल ऊष्मीकरण संयत्र तथा कपड़े धोने का विभाग है।

'ग्लोबल हॉस्पिटल' का हेलीकाप्टर से लिया गया एक दृश्य

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय, आबू पर्वत (राज.), भारत

दिनचर्या

प्रात:	3.30			अमृत सुप्रभात
प्रात:	4.00	से	4.45	सामूहिक योगाभ्यास
प्रात:	4.45	से	5.45	बाबा के कमरे में योगाभ्यास
प्रात:	5.45	से	6.30	राजयोग क्लास (मुरली श्रवण)
प्रात:	6.30	से	7.30	आध्यात्मिक ज्ञान क्लास
प्रात:	8.00	से	10.00	अल्पाहार एवं कर्मयोग
प्रात:	10.30	से	12.00	प्रवचन (गुणों पर)
दोपहर	12.30	से	01.30	ब्रह्माभोजन
दोपहर	02.00	से	04.30	स्वाध्याय, विश्राम आदि
सांय	05.00	से	06.30	ज्ञान-योग क्लास
सांय	06.30	से	07.00	सांयकाल भ्रमण
सांय	07.00	से	07.30	योगाभ्यास
सांय	07.30	से	08.15	रात्रिभोजन
रात्रि	08.45	से	10.00	क्लास (आध्यात्मिक सेवा समाचार आदि)
रात्रि	10.00			विश्राम (शुभरात्रि)

विश्व शान्ति के लिए अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग कार्यक्रम सम्पूर्ण विश्व में प्रत्येक तीसरे रविवार को सांय 6.30 से 7.30 बजे तक होता है।

STOP
CAN U SPARE 5 SECONDS
MOUNT ABU
SIGHT SEEING MAP
Guru Shikhar
PEACE PARK
Brahma Kumaris
Recreation Centre
Oriya
Trevors Tank
Achalgarh
Delwara Jain Temple
Anadhra
Sunset Point
Adhar Devi
Pandav Bhawan
Gyan Sarovar
Nakki Lake
Babas Rock
Sunset Point
Palanpur Point
Brahma Kumaris
Om Shanti Bhawan
J Watumall
Global Hospital
Research Centre
Hanuman Temple
Gaumukh

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अन्तर्गत कुछ सेवाकेन्द्र

माऊंट आबू –307 501

▶ पाण्डव भवन, अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय,
✆ (02974)-238261 से 238268

▶ ज्ञान-सरोवर, एकेडमी फॉर ए बेटर वर्ल्ड,
सालगाँव, ✆ 238788 से 238791

▶ म्यूजियम, विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय, सन-सेट पाईन्ट
✆(02974)-237260

▶ ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर
✆(02974)-238347 से 238349

आबू रोड – 307 510

शान्तिवन, तलेटी, शान्तिवन,
✆ (02974)-228101 से 228108

आबू रोड– 307 026

'संगम भवन' पारसी चाल, जि. सिरोही।
✆ (02974)-222674, 221212

नई दिल्ली –110005

पाण्डव भवन, 25, न्यू रोहतक रोड,
करोल बाग, ✆ (011)-23628976

कोलकाता – 700020

1-ए, आशुतोष मुखर्जी रोड,
✆(033)-24753521, फैक्स: 24753521

चण्डीगढ़ – 160022

राजयोग भवन, सेक्टर 33-ए,
✆ (0172)-2601339, फैक्स: 2668896

मुम्बई - 400022

19, नरोत्तम निवास, किंग सर्कल के पास, सायन, ✆ (022)-24073015

अहमदाबाद – 380022

सुखशान्ति भवन,गामदीवाला डेयरी के सामने, भूलाभाई पार्क रोड, कांकरिया, मणिनगर
✆ (079)-25324360 फैक्स: 25325150

चेन्नई – 600040

शान्तिधाम, प्लॉट-3702, क्वा-96 थर्ड अवेन्यू, प्रथम मेन रोड, अन्नानगर, 14 शॉपिंग कॉम्पलेक्स के सामने,
✆(044)-26267441,फैक्स: 26266765

गौहाटी (असम) – 781032

"विश्व शान्ति भवन", 1, बाय लेन, रुप नगर, पोस्ट बॉक्स नं. 201,
✆ (0361)-2460297

इन्दौर (म.प्र.) – 452001

"ओमशान्ति भवन", 33/4, न्यू पलासिया, वार्ड नं. 37, ✆ (0731)-2531531

रायपुर (छत्तीसगढ़) - 492001

मंदिर पथ, चौबे कालोनी,
✆ (0771)-2253253, फैक्स: 2255255

हैदराबाद (ए.पी.) – 500032

'शान्ति सरोवर' ऐस. नं. 91, ISB के पास, JNIDB के पीछे गाच्छीबोली,
✆(040)-23005983, फैक्स: 23005961

बाबा – झोपड़ी

सौर ऊर्जा संयन्त्र

शिक्षिका प्रशिक्षण केन्द्र